International Journal of Applied Research 2015; 1(4): 330-332

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2015; 1(4): 330-332
www.allresearchjournal.com
Received: 04-02-2015
Accepted: 03-03-2015

डॉ0 उर्मिला पांडे
असिस्टेंट प्रोफेसर, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत।

डॉ0 अभिषेक कुमार भारद्वाज
सीनियर रिसर्च फेलो, डिपार्टमेंट ऑफ रिसर्च, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार, भारत।

Correspondence:
डॉ0 उर्मिला पांडे
असिस्टेंट प्रोफेसर, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत।

अर्जुन - विषाद योग की प्रासांगिकता

डॉ0 उर्मिला पांडे, डॉ0 अभिषेक कुमार भारद्वाज

श्रीमद्भागवद्गीता में 'वर्णित 18 अध्यायों में प्रथम है, अर्जुन–विषाद योग। 'विषादग्रस्तता वह अवस्था है, जिसमें ग्रस्त व्यक्ति की ऊर्जा नकारात्मक हो जाती है। इतिहास में अनेक ऐसे दृष्टान्त हैं, जिससे स्पस्ट होता है कि अवसाद या विषाद सकारात्मक लोगों को होता है। जैसे विषादग्रस्तता के शिकार भगवान राम भी हुए, जब लक्ष्मण को बाण लगा, महात्मा बुद्ध ने जब जरा–रोग–शोकग्रस्त व्यक्ति को देखा, सम्राट अशोक ने कलिंग–युद्ध में विजय रक्त से रंजित रण–भूमि को देखकर शोकाकुल हुए, लेकिन इसके बाद भी इन सब ने समाज की समस्या का समाधान किया, क्योंकि इनका विवेक जागृत हुआ अर्थात् विषम परिस्थिति में भी कृष्णरूपी विवेक ही इनका सारथी था। प्रथम बार 'विषाद–योग' का वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता में मिलता है। गीता–दर्शन में ज्ञान, कर्म, एवं भक्ति की संयुक्तता को ही जीवन या पुरूषार्थ का आधार माना गया है। इसलिए 'विषाद' जिसे आज मनोरोग के रूप में ज्यादा समझा जाता है, को भी गीता ने योगमय कैसे बना दिया है ? विषाद का कारण, लक्षण एव निवारण सामान्यजन तथा समाज के लिए कितना प्रासांगिक हैं ? गीता के संदर्भ में, प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

कूट शब्द– भगवद्गीता, विषाद, विवेक एवं शोकाकुल।

अर्जुन–विषाद के कारण :

शुरू से ही इतने विपरीत परिस्थितियाँ झेलने वाला अर्जुन, मानसिक–रूप से दृढ़ होते हुए भी, बीच युद्ध स्थल में अपने पारिवारिक लोगों की केन्द्रिय भूमिका को देखकर 'असमय' मोह के कारण शोकाकुल हो गये।[1] उन्होंने श्री कृष्ण को कहा कि मैं विजय के विपरीत लक्षण देख रहा हूँ, [2] कुटुम्ब जनों को मारकर मैं नहीं जीतना चाहता, क्योंकि ऐसे विजय और राज्य मुझे संतोष नहीं देगा।[3] उनका शोक और भी बढ़ता जाता है और अतिशोकाकुल अर्जुन ने कहा कि राज्य क्या तीनों लोक भी मिले तो भी मैं ऐसा कृत्य नहीं करूँगा।[4] क्योंकि बुरे ही सही किन्तु मुझे कुटुम्ब जनों[5] को मारने का पाप लगेगा ?

यद्यपि दुर्योधन पक्ष के लोगों ने इस पर नहीं विचार किया, [6] फिर भी मुझे ऐसा लगता है, कि कुल दीपक के नाश हो जाने से कुल–धर्म[7] का पालन कैसे होगा ? कुल की स्त्रियाँ दूषित होगी[8] ? और फिर वर्ण–संकरता के कारण पितर–लोग भी अधोगति को प्राप्त होंगे ? इस प्रकार पूरा वातावरण दूषित हो जायेगा[9] ? और ऐसा करने वाले का नरक में वास होता है, ऐसा हम सुनते आये हैं,[10] अतएव मुझ शस्त्र–रहित को धृतराष्ट्र पुत्र यदि मार डाले तो यह मरना मेरे लिए श्रेयस्कर है, मैं युद्ध नहीं करूँगा।[11]

इस प्रकार न्याय–अन्याय, धर्म–अधर्म को भूलकर अर्जुन किंकर्तव्यविमूढ़ होकर, रथ में बैठ जाते हैं।

अर्जुन–विषाद के लक्षण :

शोकाकुल अर्जुन के आँखों से अश्रुधारा वह रही है, उनका युद्ध का जोश शिथिल हो गया, [12] मुख सूख गया, [13] अंगों में कम्पन होने लगा, धनुष हाथ से छुटने लगा, त्वचा में जलन होने के साथ ही उनकी बुद्धि भ्रमित हो गयी है।[14] वे श्रद्धा एवं विश्वास करते हुए

श्रीकृष्ण के शरणागति होकर प्रश्न करते हैं, कि मेरे लिए कौन सा मार्ग उचित है ? युद्ध करना या न करना।[15]

अर्जुन–विषाद का निदान :

श्री कृष्ण ने गीता में सखा, गुरू, सारथी एवं अन्तिम रूप से मनोचिकित्सक की भूमिका को स्पष्ट किया है। अर्जुन जो प्रारम्भ से अन्याय के खिलाफ संघर्ष करते हुए, आज रण–भूमि में पहुँचकर, अपने सगे–संबंधियों[16] का विचार करके, कलंक के भय एवं मोह के कारण,[17] विषाद ग्रस्तता का शिकार हो गया। उसके इस मोह एवं कलंक के भय को श्रीकृष्ण ने तत्क्षण् समझकर, उसे दूर करने के लिए उन्हें ज्ञान, कर्म एवं भक्ति से युक्त किया।

अर्जुन–विषाद का उपाय :

श्री कृष्ण ने अर्जुन का विवेक जागृत किया, उन्हें स्मरण कराया कि यह न्याय–अन्याय का युद्ध पूरे समाज के लिए आवश्यक है,[18] सिर्फ अर्जुन के लिए नहीं इस युद्ध से वंचित रहकर भी अर्जुन पुनः अवसादग्रस्त हो जायेगा,[19] इसमें कोई संदेह नहीं। इसमें उन्हें सफलता भी मिली और अर्जुन का '' मैं युद्ध नहीं करूँगा '' का वाक्य 'मैं युद्ध करूँगा' के निर्णय में बदल गया।[20]

क्योंकि जब तक यह अनिर्णय था, अर्जुन ने श्री कृष्ण के उपाय को सुना और जब वह निर्णय लेने योग्य हो गये, तो श्रीकृष्ण ने कहा कि '' मैंने तुम्हारे सम्मुख सब कुछ कह दिया, अब तुम, जैसा चाहो वैसा करो।''[21]

विषाद के प्रकार :

अर्जुन–विषाद के कारणों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि विषाद दो प्रकार के होते है।

1. स्वयं की अनुपलब्धी, अस्थिरता, अस्वस्थता, भ्रांति, शंका अकर्मण्यता, आलस्य–प्रमाद के कारण (जीवन में होने वाली हानि, अभाव के कारण जो विषाद होता है, वह वैयक्तिक विषाद है। योगसूत्र के योगअन्तराय एवं विघ्न से तुल्य है।[23] जिसे चित्त विक्षेप भी कहा गया है। चित्त विक्षेप के लक्षण है– श्वास–प्रश्वास का तेज होना, अंग में कम्पन, शोकाकुल एवं मन का बैचेन रहना। यही विषाद के भी लक्षण हैं।

2. सामाजिक विषाद :

अर्जुन–विषाद, सामाजिक विषाद है। अर्जुन–विषाद कहने का तात्पर्य यह है कि अर्जुन ने अपने कुलधर्म को बचाने के लिए अपने वैयक्तिक स्वार्थ को कोसा और युद्ध में अनिच्छा व्यक्त किया। लेकिन जब श्री कृष्ण ने उन्हें न्याय–अन्याय, धर्म–अधर्म की शिक्षा दिया और कहा कि यह युद्ध समाज के हित में आवश्यक है, तो पुनः अर्जुन ने 'कुल धर्म' के मोह को समाज हित के लिए त्याग दिया। इस प्रकार अर्जुन का विषाद अपनी उपलब्धि के लिए नहीं है।

इस संसार रूपी रण–भूमि में अनैतिक–कदाचारी लोग दुर्योधन की तरह अवगुणों के समूह में रहते हैं और भ्रष्ट समाज की प्रतिनिधित्व करते हुए भी अकेले रह जाते हैं, जबकि अर्जुन रूपी सामान्य मनुष्य अपने विवेक को जागृत करके जन–आन्दोलन के द्वारा दिशा बदल देता है, और नर से नारायण बना जाता है। इस प्रकार अर्जुन का विषाद समाज की समस्याओं का प्रतीक है।

प्रतीकात्मक रूप से यह शरीर रथ है, आत्मा रथी, बुद्धि हमारी सारथी और इन्द्रियाँ हमारे घोड़े हैं तथा अर्जुन के रथ के सफेद घोड़े हमारी सात्विक बुद्धि के परिचायक हैं।

स्वतन्त्रता आंदोलन के इतिहास में भी यह गीता–दर्शन प्रासांगिक था। महात्मा गाँधी, दयानन्द सरस्वती, लोक मान्य तिलक, श्री अरविन्द, परमहंस, यदि महापुरूषों ने गीता संदेश के द्वारा समाज में व्याप्त अज्ञान एवं विषाद को दूर कर जनमानस की जड़ता को स्वतन्त्रता आंदोलन में परिवर्तित किया था।

आज एक तरफ भ्रष्ट राजनेताओं, नौकरशाहों, माफियाओं आदि का जाल, दूसरी तरफ भारत का जनसामान्य जो मेहनत करके सफल होना चाहता है, सपने सजाता है, लेकिन इनके षड्यन्त्र का शिकार होकर बचने एवं बाहर निकलने के लिए प्रयास करता है, लेकिन वह जब तक जाति, धर्म, क्षेत्र, मानसिक दुर्बलता लोभ–मोह एवं परिवारवाद में जकड़कर सोचेगा, तो विषादग्रस्त ही रहेगा।

ये स्थितियाँ दुर्योधन एवं अर्जुन के स्थिति के समतुल्य है। अर्जुन जैसी दुविधा व्यक्ति एवं समाज दोनों के सम्मुख हैं।

आतंकवाद के खिलाफ कार्यवाही के लिए विश्व–समुदाय बड़ी आशा से एक दूसरे को पहल के लिए देखता है। जबकि एक लड़की 'मलाला' इस दुविधा से मुक्त होकर समाज को आइना दिखा रही है।

अतः विषादग्रस्तता से मुक्त होने के लिए हमें अपना विवेक हमेशा जागृत रखना चाहिये। क्योंकि अर्जुन के मन में जितने भी प्रश्न आये उन सबका उत्तर उन्होंने स्वयं के विवेक से जाना, मानवता के लिए श्रीकृष्ण ने उपदेश दिया। लेकिन प्रतीकात्मक रूप से विवेक ही हमारा सारथी अर्थात् कृष्ण है।

किसी भी समाज में समय–समय पर विसंगतियाँ भी उत्पन्न होती रहती हैं। कुछ लोग व्यक्तिगत स्वार्थ, को लोक–हित के लिए त्यागकर कार्य करते हैं, जबकि कुछ इंच मात्र भी नहीं छोड़ना चाहते हैं।

दुर्योधन का अहंकार आसुरी प्रवृति का आह्वान करता है, जबकि अर्जुन का विषाद दैवीय प्रकृति को जागृत करता है। उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि दुर्योधन, जो नीति नैतिकता को हमेशा चुनौती देता है एवं जीवनपर्यन्त बलात् चेष्टा करता है, उसे क्यों नहीं विषाद हुआ ?

क्योंकि उनकी नकारात्मकता, ईर्ष्या, क्रोध, द्वेष के द्वारा बराबर व्यक्त होकर निकल रही है। लेकिन अर्जुन का सकारात्मक विचार जैसे कम हुआ, उन पर नकारात्मकता अवसाद के रूप में हावी हो गया था, अन्याय से पीड़ित अर्जुन शोकाकुल हो गये हैं, क्योंकि वह अपनी हानि सहने के लिए तैयार हैं, राज्य का मोह त्यागने के लिए तैयार है, लेकिन क्या इससे अन्याय को बढ़ावा नहीं मिलेगा ? क्या यह समाज हित में है ? पुनः कृष्ण या सारथीरूपी विवेक के जाग्रत होने पर उनका विषाद योगमम बन गया। क्योंकि उन्होंने समाज हित में युद्ध किया, अन्याय के खिलाफ युद्ध जीता, क्योंकि उन्हें ईश्वर का दर्शन हुआ एवं जनसमान्य के लिए ज्ञान, कर्म, भक्ति से युक्त गीता–दर्शन का उद्भव हुआ। इस प्रकार उनका विषाद मानवता के लिए संदेश वाहक बनकर योगमय हो गया है, क्योंकि उनका विषाद वैयक्तिक से दूर समाजिक विषाद को व्यक्त करना है। अर्जुन–विषाद का निहितार्थ यही है कि समाज में विवेक का उदय होना चाहिये, जिस किसी भी कार्य को सात्विक बुद्धि से किया जाता है, वह कर्मयोग बन जाता है, लेकिन जिस समाज में विवेक को महत्व नहीं दिया जाता, वहाँ पर अनर्थ होता है।

संदर्भ सूची

1. तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान्
   कृपया परमाविष्ये विषीदन्निदम ब्रवीत। **गीता 1/27**
2. निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव
   न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजन माहवे। **गीता 1/31**
3. नकाङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि चृ
   किं नो राज्येन किं गोविन्द किं भोगैर्जिवितेन वा। **गीता 1/32**
4. एतान्न हन्तु .....नु महीकृते। **गीता 1/35**
5. निहत्य धार्तराष्ट्रान्न .....तायिनः। **गीता 1/36**
6. यद्यप्येते .....दोषं जनार्दन। **गीता, 1/37, 38**
7. कुलक्षये .....भवत्युत। **गीता, 1/40**
8. अधर्माभिभवात्कृष्णा .....वर्णसंकरः। **गीता, 1/41**
9. संकरो नारकायैव .....पिण्डोकक्रियाः। **गीता, 1/42**
10. उत्सन्न कुल धर्मानां .....भवतीत्यनुशुश्रुम। **गीता, 1/44**
11. यदि माम .....क्षेमतरं भवेत।
12. एवंमुक्त्वा .....बभूव ह। **गीता, 1/46, 2/9**
13. द्वष्ट्वेमं स्वजनं .....रोमहर्षश्रच जायते। **गीता, 1/29**
14. गाण्डीवं ..... भ्रमतीव चमे मनः। **गीता, 1/30**
15. निमत्तानि च .....स्वजन माहवे। **गीता, 1/31**
16. न चैतहिग्नः .....प्रमुखे धार्तराष्ट्राः। **गीता, 2/6**
17. आचार्याः .....सम्वनिघनस्तथा। **गीता, 1/34**
18. येषामर्थे ..... धनानि च। **गीता, 1/33**
19. यदृच्छया .....युद्धमी द्वशम्। **गीता, 2/32**
20. अथ .....पापमवाप्यस्यसि। **गीता, 2/33**
21. नष्टो मोहः ..... वचनंतव **गीता, 18/73**
22. इतिते .....तथा कुरू। **गीता, 18/63**
23. योगसूत्र .....1/29, 30।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लेखक–सिंह, अरूण, पु. आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान प्रका. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली 2009।
2. लेखक–आयंगर, वी.के.एस. प्रका., ओरियंट लाग्मैन लिमिटेड, दिल्ली 1999।
3. लेखक–तिलक, बालगंगाधर, पु. गीता रहस्य भाग 1, प्रका. अर्चना प्रका. दिल्ली, 2008।
4. अनुवादक–सुधार, गणेशलाल, पुस्तक–श्रीमद्भागवत् गीता–विज्ञानभाष्य, प्रका. पं. एम.एस. ओसारिसर्च सेल, राजस्थान, 2006।
5. व्याख्याकार–स्वामी, अड़गड़ानन्द जी, पु. श्रीमद्भागवत् यथार्थ गीता प्रका. श्री अड़गड़ानन्द जी आश्रम ट्रस्ट, मुंबई, 1999।